महिला सशक्तिकरण

बाएं : *महिलाएं अभी भी हमारे ग्रामीण जीवन का आधार हैं। घरेलू कामों, खेती और संसाधन प्रबंधन में वे भारी योगदान दे रही हैं। अब वे न केवल राजनीति में हिस्सा लेने लगी हैं बल्कि सामाजिक परिवर्तन की वाहक भी बनती जा रही हैं।*

मध्य : *सरमौली, उत्तराखंड में माटी संगठन की सदस्याएं।*

दाएं : *माटी की सदस्य पुष्पा इसी इलाके में मिलने वाली भेड़ की ऊन से 'आसन' बना रही हैं।*

सरमौली, उत्तराखंड में सक्रिय माटी लगभग २० महिलाओं का संगठन है। ये महिलाएं मूल रूप से घरेलू हिंसा का विरोध करने के लिए एकजुट हुई थीं। इसके बाद वे स्थानीय राजनीति में सहभागिता, अपने वन एवं जल संसाधनों के प्रबंधन और बीज विविधता आधारित खेती में सहभागिता के जरिए न केवल प्रत्यक्ष लोकतंत्र का जीता-जागता उदाहरण बन चुकी हैं बल्कि होमस्टे पर आधारित न्यून-प्रभाव पर्यटन के सहारे अपनी आजीविका में इजाफा भी कर रही हैं।

इस शृंखला के दूसरे छोर पर केरल के कुदुंबश्री प्रयोग को रखा जा सकता है। यह एक विशाल सरकारी कार्यक्रम है जो नीचे से ऊपर की ओर (व्यक्ति, मोहल्ला, जिला) केंद्रित अभिशासन संरचना के जरिए महिला. ओं के सशक्तिकरण पर जोर देता है । कुदुंबश्री की ओर से महिलाओं को लघु उद्यमों के लिए प्रशिक्षण, ने. टवर्किंग और मार्केटिंग सहातया भी प्रदान की जाती है। यद्यपि यह कार्यक्रम महिलाओं के सशक्तिकरण की दिशा में एक मिसालिया कामयाबी रहा है मगर अभी भी स्थानीय स्तर पर कच्चा माल जुटाना और उत्पादों की स्थानीय बाजारों में खपत सुनिश्चित करना एक बड़ी चुनौती बनी हुई है।

बाएं से दाएं : *तिरुअनंतपुरम जिले में एक कपड़ा बुनकर महिला तथा कुदुंबश्री नेटवर्क से जुड़ी कोच्ची स्थित न्यूट्रीमिक्स आहार उत्पाद इकाई में कार्यरत महिलाओं का एक समूह।*